SANKALP EK PRAYAS
SOCIETY, BHILAI
Monthly Newsletter
जुलाई 2026

“सीख, सहयोग और संरचना
एक मजबूत नींव का महीना”

“शिक्षा की ओर बढ़े कदम"

छत्तीसगढ़ के राजनादगाँव जिले के एक छोटे से गाँव ईरा में "संकल्प एक प्रयास " संस्था की आदर्श बाल ग्राम फेलो लुकेश्वरी हमेशा की तरह 'गरिमा मंच' की एक कार्यशाला लेने गई थीं। इसी दौरान उनकी नज़र सड़क पर निरुद्देश्य घूम रही एक छोटी बच्ची पर पड़ी। जब लुकेश्वरी ने आस-पास के ग्रामीणों से पूछा कि क्या यह बच्ची स्कूल नहीं जाती, तब उन्हें यह झकझोर देने वाली सच्चाई पता चली कि वह कभी स्कूल गई ही नहीं है। मामले की गंभीरता को समझते हुए लुकेश्वरी ने तुरंत उस बच्ची के घर का रुख किया और उसके माता-पिता से मुलाकात की। बातचीत के दौरान सामने आया कि बच्चों का आधार कार्ड न बने होने के कारण और परिवार में शिक्षा के प्रति जागरूकता की कमी की वजह से उन्हें कभी स्कूल नहीं भेजा गया। इतना ही नहीं, उस परिवार में तीन बच्चे थे—मनीषा , लजवंती और मनीष—जिन्हें उम्र के हिसाब से क्रमशः कक्षा 3, 6 और 7 में होना चाहिए था, लेकिन स्कूल से पूरी तरह दूर रहने के कारण उन्हें पढ़ाई का बुनियादी ज्ञान भी नहीं था। लुकेश्वरी ने हार मानने के बजाय पूरे धैर्य के साथ माता-पिता और बच्चों को शिक्षा के महत्व, आत्मनिर्भर बनने और एक बेहतर भविष्य के सपनों के बारे में विस्तार से समझाया। उनकी बातों का ऐसा सकारात्मक असर हुआ कि बच्चे और उनके माता-पिता दोनों स्कूल जाने के लिए राजी हो गए। इसके बाद लुकेश्वरी ने तुरंत गाँव के सरपंच और स्थानीय प्राथमिक व मिडिल स्कूल के प्रधानपाठक से संपर्क किया।

हालांकि उस समय दाखिले की अंतिम तिथि निकल चुकी थी, फिर भी लुकेश्वरी के विशेष अनुरोध और बच्चों की परिस्थिति को देखते हुए प्रधानपाठक जी ने उन्हें अस्थायी रूप से कक्षाओं में बैठने की अनुमति दे दी ताकि वे पढ़ाई के माहौल में ढल सकें। अगले ही दिन लुकेश्वरी की प्रेरणा से माता-पिता बच्चों को लेकर स्कूल पहुँचे और औपचारिकताएं पूरी कीं। उस दिन के बाद से तीनों बच्चे न सिर्फ नियमित रूप से स्कूल जाने लगे, बल्कि वे गाँव के ' सीख ,सृजन सेंटर' और 'गरिमा मंच'भी प्रतिदिन आने लगे, जहाँ वे खेल-खेल में नई-नई चीज़ें सीखने लगे। धीरे-धीरे बच्चों के व्यवहार, आत्मविश्वास और सीखने की क्षमता में एक अभूतपूर्व बदलाव देखने को मिला और वे स्कूल के अन्य बच्चों के साथ घुल-मिल गए। इस साझा प्रयास की सबसे बड़ी और सुखद सफलता तब मिली जब वर्ष 2026 में तीनों बच्चों का विद्यालय में विधिवत प्रवेश हो गया। आज मनीष , लजवंती और मनीषा के चेहरों पर तैरती मुस्कान और उनके माता-पिता के द्वारा दिया गया 'धन्यवाद' ही लुकेश्वरी के इस सफर की सबसे बड़ी पूंजी है, जो यह साबित करती है कि यदि सही समय पर जागरूकता, संवाद और निरंतर प्रयास किया जाए, तो किसी भी बच्चे का भविष्य बदला जा सकता है।

परिवर्तन के सारथी:
जब गाँव बनने चले 'आदर्श बालग्राम'

सूरज की पहली किरण के साथ ही 'संकल्प एक प्रयास' (SEP) के परिसर में एक नई ऊर्जा और उत्साह का माहौल था. तारीख थी 13 जुलाई 2026. छत्तीसगढ़ के अलग-अलग ग्रामीण अंचलों से आए, ऊर्जावान युवाओं की आँखों में एक अनोखा सपना था—अपने-अपने कार्यक्षेत्र के गाँवों को 'आदर्श बालग्राम' में बदलना.

ये कोई साधारण युवा नहीं थे, ये नव-नियुक्त 'सीख' और 'सृजन' फेलोज़ थे. इस बार बदलाव की यह मुहिम बहुत बड़ी थी, क्योंकि ग्रामीण शिक्षा और विकास की एक नई इबारत लिखने के लिए 'सीख' और 'सृजन' के कुल 80 ,80 उत्साही प्रतिभागी एक साथ इस मंच पर जुटे थे.

इस दो दिवसीय इंडक्शन प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य इन सभी फेलोज़ को " संकल्प एक प्रयास " के मूल मिशन, विज़न और कार्यप्रणाली से गहराई से जोड़ना था, ताकि वे समझ सकें कि एक साधारण से गाँव को बच्चों के अनुकूल 'आदर्श बाल ग्राम' कैसे बनाया जाता है.

सपनों को पंख देता विज़न

कार्यक्रम की शुरुआत संगठन के उस बड़े विज़न को समझने से हुई, जहाँ हर बच्चा सुरक्षित, शिक्षित, सक्षम और अपने भविष्य के लिए पूरी तरह तैयार हो. फेलोज़ को सिखाया गया कि 'आदर्श बाल ग्राम' महज़ एक नाम नहीं है, बल्कि एक ऐसा सुरक्षित और समावेशी माहौल है जहाँ हर बच्चे को न सिर्फ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले, बल्कि उसका सामाजिक, भावनात्मक और समग्र विकास भी हो.

इस प्रशिक्षण की सबसे खूबसूरत बात यह थी कि यहाँ सिर्फ लेक्चर नहीं दिए जा रहे थे. पूरी ट्रेनिंग अनुभवात्मक शिक्षण (Experiential Learning) पर आधारित थी. कहीं रंग-बिरंगे पीपीटी (PPT) के ज़रिए तकनीकी बातें समझाई जा रही थीं, तो कहीं समूह चर्चाओं (Group Discussions) में फेलोज़ अपनी रणनीतियाँ बना रहे थे. रोल-प्ले और मज़ेदार गतिविधियों के ज़रिए वे यह सीख रहे थे कि जब वे ज़मीन पर उतरेंगे, तो समुदाय के साथ कैसे जुड़ेंगे.

SANKALP
Empowering Dreams, Building Future

वंदना मैम का मार्गदर्शक

प्रशिक्षण के सबसे महत्वपूर्ण सत्रों में से एक रहा वंदना मैम का संबोधन. उन्होंने बेहद आत्मीय और विस्तारपूर्वक ढंग से फेलोज़ को समझाया कि 'आदर्श बालग्राम' की परिकल्पना को धरातल पर उतारने में उनकी भूमिका कितनी बड़ी है.

वंदना मैम ने कहा:

"आप केवल एक शिक्षक या कार्यकर्ता नहीं हैं, आप इस बड़े बदलाव के वाहक हैं. आपका काम सिर्फ केन्द्र तक सीमित नहीं है, बल्कि आपको गाँव के हर घर, हर अभिभावक और स्थानीय संस्थाओं के बच्चों को विकास में साझीदार बनाना है. जब तक समुदाय खुद शिक्षा और बाल संरक्षण की ज़िम्मेदारी नहीं उठाएगा, तब तक दीर्घकालिक बदलाव मुमकिन नहीं है."

उन्होंने फेलोज़ को गाँव में काम करने के व्यावहारिक तरीके और उनके उत्तरदायित्वों को बेहद बारीकी से समझाया.

हस्तक्षेपों का ताना-बाना

जैसे-जैसे ट्रेनिंग आगे बढ़ी, इन फेलोज़ को उन सभी कड़ियों (Interventions) से रूबरू कराया गया जो मिलकर एक आदर्श बाल ग्राम का निर्माण करती हैं:

Learning Resource Centre (LRC):
बच्चों के लिए ज्ञान का केंद्र कैसे बनेगा, इसे विस्तार से समझा गया.

Digital Learning (E-Udaan , E- MERG) व कंप्यूटर शिक्षा:
इसके ज़रिए ग्रामीण बच्चों को आधुनिक दुनिया से जोड़ा जाएगा.

STEM Learning और साइंस मेला-
इन अनूठे प्रयासों से बच्चों के भीतर वैज्ञानिक सोच और जिज्ञासा की चिंगारी सुलगाई जाएगी.

समग्र विकास व सहयोग:
होनहार बच्चों के लिए Meritorious Students Support और बच्चों के समग्र विकास (Holistic Development) के लिए पीयर लर्निंग (Peer Learning) , प्रतियोगिता परीक्षा के लिए (NAVODAYA ,UTKARSH, EKLAVY)जैसी रणनीतियों पर चर्चा हुई.

सिर्फ इतना ही नहीं, यह भी तय किया गया कि गाँव की व्यवस्था को मज़बूत कैसे किया जाए. इसके लिए पैरेंट-टीचर मीटिंग (PTM), विलेज लेवल एजुकेशन कमेटी (VLEC) और स्कूल मैनेजमेंट एंड डेवलपमेंट कमेटी (SMDC) को सक्रिय करने के गुण भी फेलोज़ को सिखाए गए. साथ ही, काम में पारदर्शिता और गुणवत्ता बनाए रखने के लिए दस्तावेजीकरण (Documentation) और रिपोर्टिंग की बारीकियों से भी उन्हें अवगत कराया गया.

एक नए सफर की शुरुआत

14 जुलाई की शाम तक, जब दो दिनों का यह सघन प्रशिक्षण संपन्न हुआ, तो हॉल में बैठे सभी फेलोज़ के चेहरों पर एक अलग ही आत्मविश्वास चमक रहा था. उनके भीतर की झिझक अब नेतृत्व क्षमता, टीमवर्क और बेहतर संचार कौशल में बदल चुकी थी.

वे अब केवल नए ज्वाइन किए हुए फेलोज़ नहीं थे; वे संकल्प एक प्रयास के 'परिवर्तन के सारथी' बन चुके थे, जो अपने-अपने पांच गाँवों में जाकर बच्चों के लिए एक सुनहरे और सुरक्षित भविष्य की नींव रखने के लिए पूरी तरह तैयार थे. इस प्रकार, यह इंडक्शन ट्रेनिंग 'आदर्श बाल ग्राम ' के सपने को हकीकत में बदलने की दिशा में एक बेहद मज़बूत और ऐतिहासिक कदम साबित हुई.

बदलाव का संकल्प : एक नया सवेरा

'संकल्प एक प्रयास'—एक ऐसा नाम जिसने 250 गाँवों के बच्चों की दुनिया बदलने का सपना देखा है। इस विशाल सपने को ज़मीन पर उतारने के लिए इन 250 गाँवों को 50 कलस्टरों में बाँटा गया, जहाँ हर 5 गाँव की ज़िम्मेदारी एक एबीजी फेलो के कंधों पर थी।
सपना बड़ा था: हर गाँव को 'आदर्श बाल ग्राम' बनाना। एक ऐसा गाँव जहाँ हर बच्चा पढ़े, आगे बढ़े और अपने पंखों को नई उड़ान दे।

लेकिन किसी भी बड़े मिशन की असली ताक़त उसके सिपाही होते हैं। इस मिशन के अग्रदूत थे एबीजी फ़ेलोज़ (ABC Fellows)। 50 कलस्टरों के लिए 50 एबीजी फ़ेलोज़ की ज़रूरत थी, लेकिन मैदान में केवल 25 फ़ेलोज़ ही डटे हुए थे। आधा सफ़र तय हो चुका था, पर मंज़िल तक पहुँचने के लिए 25 और जाँबाज़ों की सख़्त दरकार थी।

उम्मीद की नई किरण

इस कमी को पूरा करने और 250 गाँवों में बदलाव की लौ को तेज़ करने के लिए एक विशेष परीक्षा का आयोजन किया गया। इस परीक्षा में उतरे 50 जाँबाज़ ट्रेनिं फ़ेलोज़—ऐसे युवा जिनके सीने में समाज सेवा का जुनून था और आँखों में बच्चों का बेहतर भविष्य।

माहौल में एक अजीब-सी हलचल और उत्साह था। यह केवल कागज़-क़लम की परीक्षा नहीं थी, बल्कि गाँव के एक-एक बच्चे के चेहरे पर मुस्कान लाने की काबिलियत का इम्तिहान था।

25 नए नायकों की तलाश

इन 50 ट्रेनिं फ़ेलोज़ में से 25 सबसे समर्पित एबीजी फ़ेलोज़ का चयन किया जाना है। ये चुने हुए 25 नायक उन बाकी बचे 25 कलस्टरों की कमान संभालेंगे, जिनकी नींव पहले से ही रखी जा चुकी है।

अब जब 25 पुराने और 25 नए फ़ेलोज़ एक साथ कदम मिलाएँगे, तो 50 के 50 कलस्टर पूरी ऊर्जा से सराबोर हो उठेंगे।

इन 25 नए फ़ेलोज़ का आना सिर्फ़ एक नियुक्ति नहीं है, बल्कि 250 गाँवों के हज़ारों बच्चों के सपनों को सच करने की दिशा में उठाया गया एक ऐतिहासिक कदम है। बहुत जल्द, " संकल्प एक प्रयास " का यह प्रयास सफलता की एक नई इबारत लिखेगा और हर गाँव सही मायनों में 'आदर्श बाल ग्राम' कहलाएगा।

"जब इरादे नेक हों और
संकल्प में सच्चाई हो,
तो हर गाँव आदर्श
बाल ग्राम बनता है।"

अनुभव से बदलाव तक - ' ABG विशेषज्ञ फेलो ' की नई पहल

ग्रामीण विकास और सामाजिक बदलाव की दिशा में एक नई उम्मीद का सूरज उगा है। एबीजी विशेषज्ञ फेलो ने अपने ट्रेनि फेलोज की कार्यक्षमता को बढ़ाने, उन्हें नए कौशल सिखाने और उपलब्ध संसाधनों के सही उपयोग में पारंगत बनाने के लिए एक व्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम की शुरुआत की है। इस महीने से शुरू हुआ , यह अभियान केवल एक ट्रेनिंग प्रोग्राम नहीं, बल्कि गांवों के सर्वांगीण विकास का एक मजबूत ब्लूप्रिंट है।

अनुभव से सीखने' की अनोखी मिसाल

इस पहल की सबसे खास बात यह है कि इसमें प्रशिक्षण का जिम्मा उन हाथों में सौंपा गया है, जो पहले से ही इन राहों पर चलकर अपनी पहचान बना चुके हैं। ज्ञान और अनुभव का यह आदान-प्रदान तीन प्रमुख धाराओं में बाँटा गया है:

गरिमा फेलोज:

ये अनुभवी साथी 'गरिमा' कार्यक्रम के नए ट्रेनिं फेलोज को मार्गदर्शन देंगे और गरिमापूर्ण जीवन के मूल्यों को जमीनी स्तर पर उतारना सिखाएंगे।

सीख के फेलोज:

सीख ' कार्यक्रम के एबीजी फेलोज नए साथियों को नई तकनीकें, ज्ञान और कौशल सिखाकर उन्हें सशक्त बनाएंगे।

सृजन के फेलोज:

'सृजन' के अनुभवी फेलोज अपने नए साथियों में रचनात्मकता, निर्माण और नए विचारों को धरातल पर लाने का हुनर भरेंगे।

"जब कोई अपना ही अनुभव साझा करता है, तो सीखना केवल किताबों तक सीमित नहीं रहता, वह सीधे दिल और दिमाग में उतर जाता है।"

लक्ष्य: 5 गांवों में दिखेगा जमीनी बदलाव

इस गहन प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य ट्रेनिं फेलोज को इस योग्य बनाना है कि वे अपने-अपने आबंटित 5 गांवों में जाकर योजनाओं का सही संचालन और प्रभावी क्रियान्वयन (Implementation) कर सकें।
नए हुनर, विषय की गहरी समझ और उपलब्ध साधनों का सही इस्तेमाल सीखने के बाद, ये फेलो जब गांवों में कदम रखेंगे, तो उनके काम में अधिक निखार और गति देखने को मिलेगी।

बदलाव का संकल्प

इस प्रशिक्षण की शुरुआत के साथ ही ट्रेनिं फेलोज के चेहरे पर एक नया उत्साह और सीख का आत्मविश्वास नजर आ रहा है। यह पहल न केवल फेलोज की व्यक्तिगत क्षमता को बढ़ाएगी, बल्कि उन पांचों गांवों के निवासियों के जीवन में भी एक सकारात्मक और स्थाई बदलाव की नींव रखेगी।
एबीजी विषय विशेषज्ञ फेलोज की यह पहल साबित करती है कि जब अनुभव और नए दृष्टिकोण का मिलन होता है, तो ग्रामीण भारत के विकास की गति दोगुनी हो जाती है।

250 गाँवों में गूँजी बच्चों की किलकारी:
प्रवेश उत्सव' के साथ 'आदर्श बाल ग्राम' की ओर बढ़े कदम

दिनांक: 1 जुलाई 2026

वह सुबह आम सुबह जैसी नहीं थी। छत्तीसगढ़ और उसके आसपास के 250 गाँवों में, जहाँ कल तक एक अजीब सा सन्नाटा पसरा हुआ था, वहाँ अचानक बच्चों के खिलखिलाते चेहरों ने एक नए उत्सव का आगाज़ कर दिया। यह अद्भुत नज़ारा था 'प्रवेश उत्सव' का, जिसने पूरे क्षेत्र को एक नई ऊर्जा से भर दिया।
जैसे ही सूरज की पहली किरणें धरती पर पड़ीं, संकल्प एक प्रयास सोसाइटी के लर्निंग रिसोर्स सेंटर, सीख , सृजन और गरिमा मंच , उमंग, नए उत्साह, नए विश्वास और एक नई पहचान के साथ चहक उठे। मौका था शैक्षणिक सत्र 2026–27 के भव्य शुभारंभ का।

सीख, सृजन और गरिमा: बदलाव के तीन मजबूत स्तंभ

संकल्प एक प्रयास सोसाइटी द्वारा इस बार एक बहुत बड़ा और दृढ संकल्प लिया गया है—इन 250 गाँवों को 'आदर्श बाल ग्राम' के रूप में विकसित करना। इस दूरदर्शी सोच के पीछे तीन मुख्य कड़ियाँ काम कर रही हैं:

सीख
इसके माध्यम से बच्चों की बुनियादी शिक्षा को ज़मीनी स्तर पर सशक्त किया जा रहा है।

सृजन
बच्चों के भीतर की रचनात्मकता, कला और उनके जीवन कौशल (Life Skills) को निखारने का मंच।

गरिमा
प्रत्येक बच्चे के आत्मसम्मान, समानता और समाज में उनके समावेश को सुनिश्चित करने की एक अनूठी पहल।

"हमारा उद्देश्य केवल बच्चों को केन्द्र तक लाना नहीं है, बल्कि हर बच्चे को शिक्षा, सुरक्षा, सहभागिता और समग्र विकास के समान अवसर देना है।"

जब पूरा समुदाय एक सुर में गा उठा

इस प्रवेश उत्सव की सबसे खूबसूरत बात यह रही कि इसमें केवल बच्चे शामिल नहीं थे। गाँवों के इस कायाकल्प में सामुदायिक शिक्षकों, फेलोज़, समर्पित स्वयंसेवकों, जागरूक अभिभावकों और समुदाय के गणमान्य सदस्यों ने कंधे से कंधा मिलाकर हिस्सा लिया। हर कोई इस नई शुरुआत को और भी प्रेरणादायक बनाने के लिए प्रतिबद्ध दिखा। बच्चों का स्वागत तिलक लगाकर और फूलों के साथ किया गया, जिससे उनके चेहरों की मुस्कान दोगुनी हो गई।

एक नई उम्मीद का सवेरा

यह आयोजन केवल एक नए शैक्षणिक सत्र की औपचारिक शुरुआत नहीं है, बल्कि यह उन 250 गाँवों के भविष्य को बदलने की दिशा में बढ़ाया गया एक ऐतिहासिक कदम है।

कहते हैं कि हर नई शुरुआत एक नई उम्मीद लेकर आती है। आज इन 250 गाँवों के बच्चों की यह निश्छल मुस्कान और आँखों में चमकते सपने, पूरे समाज को एक बेहतर और सुनहरे भविष्य की ओर आगे बढ़ने की प्रेरणा दे रहे हैं।

शिक्षा और महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में कार्यरत 'संकल्प एक प्रयास ' संस्था का विस्तार, अन्य जिलों में खुला नया कार्यालय

उतई: शिक्षा के प्रसार और महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में पिछले लंबे समय से सक्रिय सामाजिक संस्था 'संकल्प एक प्रयास ' ने अपने कदम आगे बढ़ा दिए हैं। पाँच जिलों में अपनी सेवाएँ देने वाली इस संस्था का मुख्य कार्यालय अब तक केवल उतई में ही संचालित था, लेकिन संस्था के बढ़ते दायरे और लोगों की जरूरतों को देखते हुए अब अन्य जिलों में भी कार्यालय खोलने की शुरुआत कर दी गई है।

इसी कड़ी में संस्था ने एक बड़ा कदम उठाते हुए ' राजनांदगांव ,बेमेतरा ,धमतरी ' जिले में अपने नए कार्यालय का शुभारंभ किया है।

संस्था के पदाधिकारियों ने बताया कि पाँच जिलों में जमीनी स्तर पर कार्य करने के दौरान एक ही केंद्रीय कार्यालय (उतई) से सभी गतिविधियों को संभालना चुनौतीपूर्ण हो रहा था। महिलाओं और बच्चों तक बेहतर ढंग से पहुँच बनाने और संस्था की योजनाओं का सुचारू संचालन करने के लिए स्थानीय स्तर पर कार्यालयों की आवश्यकता महसूस की जा रही थी। राजनांदगांव में नया ऑफिस खुलने से स्थानीय महिलाओं और छात्रों को संस्था से जुड़ने और उसकी योजनाओं का लाभ उठाने में काफी आसानी होगी।

'संकल्प एक प्रयास ' संस्था का लक्ष्य आने वाले समय में बालोद जिले में भी जल्द से जल्द अपने दफ्तर शुरू कर देगे , ताकि शिक्षा और सशक्तिकरण का यह अभियान हर जरूरतमंद तक मजबूती से पहुँच सके। राजनांदगांव , बेमेतरा ,धमतरी में कार्यालय खुलने पर क्षेत्र के प्रबुद्ध जनों और महिलाओं ने हर्ष व्यक्त करते हुए संस्था को शुभकामनाएं दी हैं।

'गरिमा' की नई उड़ान: जब बदलाव के संकल्प के साथ एकजुट हुए युवा कदम

04 जुलाई 2026 की वह सुबह 'संकल्प एक प्रयास' संस्था के परिसर में एक अलग ही ऊर्जा और उत्साह की गूंज थी। मौका था नव-चयनित 'गरिमा फेलोज़' के इंडक्शन प्रशिक्षण का। ये वे युवा चेहरे थे, जिनकी आँखों में समाज को बदलने के बड़े सपने थे, और आज उन सपनों को हकीकत की ज़मीन पर उतारने के लिए पहला कदम बढ़ाया जा रहा था। इस प्रशिक्षण का एकमात्र और बेहद खूबसूरत उद्देश्य था—फेलोज़ को संस्था के विज़न और मिशन की गहराई से रूबरू कराना, ताकि जब वे कल समुदाय के बीच जाएँ, तो महज़ एक कार्यकर्ता बनकर नहीं, बल्कि बदलाव के सच्चे दूत बनकर उभरें।

चार अध्याय: बदलाव की अनूठी कड़ियाँ

जैसे-जैसे दिन आगे बढ़ा, प्रशिक्षण का माहौल और भी जीवंत होता गया। संस्था के मार्गदर्शकों ने बड़े ही सरल और प्रभावी ढंग से फेलोज़ को उन चार मुख्य स्तंभों (हस्तक्षेपों) के बारे में बताया, जिन पर इस पूरे सफर की नींव टिकी है:

किताबों से परे 'स्कूल जागरूकता': फेलोज़ ने सीखा कि कैसे सिर्फ किताबों तक सीमित न रहकर, स्कूलों के साथ मिलकर बच्चों के लिए ऐसे जागरूकता मॉड्यूल तैयार करने हैं जो उनके जीवन को नई दिशा दे सकें।

'गरिमा मंच' की गूंज:

यह सिर्फ एक मंच नहीं, बल्कि समुदाय की आवाज़ है। यहाँ चर्चा हुई कि कैसे समाज की रूढ़ियों और समस्याओं के खिलाफ लोगों को एकजुट किया जाए और उनमें सकारात्मक बदलाव की अलख जगाई जाए।

'गर्ल्स राइजिंग'

उम्मीदों के नए पंख: बेटियों के सर्वांगीण विकास और खेल के मैदान में उनकी दहाड़ को कैसे बढ़ावा देना है, इस सत्र ने हर एक फेलो के दिल को छू लिया। लड़कियों को नए अवसर और हिम्मत देने का संकल्प यहाँ और मजबूत हुआ।

'स्वास्थ्य शिविर'—

सेवा की ओर कदम: सुदूर और जरूरतमंद इलाकों तक बुनियादी स्वास्थ्य सेवाएं कैसे पहुँचानी हैं और लोगों को अपने स्वास्थ्य के प्रति कैसे जागरूक करना है, इसके व्यावहारिक गुरु फेलोज़ को सिखाए गए।

सवाल, जवाब और एक नया विश्वास

प्रशिक्षण का सबसे खूबसूरत हिस्सा वह था जब संवाद (Interaction) शुरू हुआ। फेलोज़ ने सिर्फ बातें सुनी नहीं, बल्कि सक्रिय होकर अपने मन की शंकाएं रखीं, सवाल पूछे और चुनौतियों से निपटने के रास्ते तलाशे। कमरे में बैठे हर एक युवा के चेहरे पर एक ऐसी चमक थी, जो यह बता रही थी कि अब उन्हें अपनी ज़िम्मेदारियों की राह बिल्कुल साफ़ दिखाई दे रही है।

> "जब हम यहाँ आए थे, तो हमारे पास सिर्फ एक इच्छा थी—कुछ अच्छा करने की। लेकिन आज इस प्रशिक्षण के बाद, हमारे पास एक स्पष्ट नक्शा और अटूट विश्वास है कि हम बदलाव ला सकते हैं।"
>
> – गरिमा फेलो

एक नए सफर की शुरुआत

दिन ढलने के साथ जब यह इंडक्शन प्रशिक्षण सफलतापूर्वक संपन्न हुआ, तो हॉल से बाहर निकलने वाले कदम पहले से कहीं ज्यादा मजबूत और आत्मविश्वासी थे। 'संकल्प एक प्रयास' का यह प्रशिक्षण केवल एक आधिकारिक प्रक्रिया नहीं थी, बल्कि यह शुरुआत थी एक ऐसे सफर की, जहाँ ये गरिमा फेलोज़ अब समाज के कोने-कोने में जाकर विकास और सशक्तिकरण की नई इबारत लिखने को तैयार हैं।

मेहनत रंग लाई:

'संकल्प एक प्रयास' केंद्र के चार बच्चों ने चूमा आसमान, एकलव्य आवासीय विद्यालय में चयन

— कोटराभाठा

कहते हैं, "जहां चाह होती है, वहां राह अपने आप बन जाती है।" इस कहावत को अक्षरशः सच कर दिखाया है ग्राम कोटरा भाठा के चार होनहार बच्चों—डिंपल, दिव्या, भार्गव और तुषार ने। विपरीत परिस्थितियों और आर्थिक तंगहाली को मात देते हुए इन बच्चों ने प्रतिष्ठित एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय की प्रवेश परीक्षा में सफलता का परचम लहराया है। कोटरा भाटा गांव से एक साथ चार बच्चों का चयन होना इलाके में चर्चा और गौरव का विषय बना हुआ है।

यह सफलता केवल इन बच्चों की नहीं, बल्कि पिछले 4 वर्षों से गांव में शिक्षा और महिला सशक्तिकरण की अलख जगा रही संस्था 'संकल्प एक प्रयास' के निस्वार्थ समर्पण की भी जीत है।

आर्थिक तंगी पर भारी पड़े हौसले

चयनित बच्चों की पारिवारिक पृष्ठभूमि बेहद सामान्य है। उनके माता-पिता खेती और मजदूरी करके किसी तरह घर का गुजारा चलाते हैं। ऐसे में बच्चों के लिए बेहतर और उच्च स्तरीय शिक्षा का सपना देखना एक बड़ी आर्थिक चुनौती थी। लेकिन इन बच्चों की आंखों में कुछ बड़ा करने का ख्वाब था, जिसे 'संकल्प एक प्रयास' केंद्र की शिक्षिकाओं ने न सिर्फ पहचाना, बल्कि उसे पूरा करने का बीड़ा भी उठाया।

शिक्षिकाओं का अनोखा प्रयास:

फॉर्म भरने से लेकर परीक्षा केंद्र तक का सफर

केंद्र की शिक्षिका, श्रीमती खिलेश्वरी और श्रीमती पूर्णिमा साहू ने इन बच्चों को तराशने में अपनी पूरी ताकत झोंक दी। जब बच्चों के माता-पिता परीक्षा के कठिन सवालों को देखकर उम्मीद खो चुके थे, तब शिक्षिकाओं का अटूट विश्वास ही बच्चों का संबल बना।

आर्थिक और तकनीकी सहयोग:

शिक्षिकाओं ने बच्चों के फॉर्म भरने से लेकर पढ़ाई सामग्री का पूरा खर्च खुद उठाया। ऑनलाइन फॉर्म भरने, गूगल से परीक्षा के पीडीएफ और स्टडी मटेरियल निकालने जैसे सारे तकनीकी काम उन्होंने खुद किए।

अतिरिक्त समय और विशेष ध्यान:

शिक्षिकाओं ने सेंटर के नियमित समय के अलावा भी बच्चों को अतिरिक्त समय देकर तैयारी कराई। बच्चों के सीखने के स्तर को ध्यान में रखकर हर दिन विशेष गतिविधियां आयोजित की गईं।
परीक्षा केंद्र की जानकारी देने, प्रवेश पत्र निकलवाने से लेकर बच्चों को परीक्षा केंद्र तक सुरक्षित पहुंचाने की जिम्मेदारी भी शिक्षिकाओं ने स्वयं निभाई।

चयन के बाद भी जारी है 'प्रयास'

सफलता मिलने के बाद भी संस्था की जिम्मेदारी खत्म नहीं हुई है। अब बच्चों के दाखिले (Admission) की प्रक्रिया को सुगम बनाने के लिए शिक्षिकाएं लगातार दौड़-भाग कर रही हैं। बच्चों का जाति प्रमाण पत्र, निवास प्रमाण पत्र बनवाना हो या मेडिकल सर्टिफिकेट, हर दस्तावेज़ी काम में संस्था उनका पूरा मार्गदर्शन कर रही है।

> प्रतिभा किसी परिचय की मोहताज नहीं होती। हमारी कड़ी मेहनत, निस्वार्थ सेवा और बच्चों के अटूट संकल्प का परिणाम आज सबके सामने है। हमारे गांव से चार बच्चों का चुना जाना यह साबित करता है कि सही मार्गदर्शन मिले तो ग्रामीण अंचल के बच्चे भी आसमान छू सकते हैं।
>
> श्रीमती खिलेश्वरी एवं श्रीमती पूर्णिमा साहू,
> शिक्षिकाएं ('संकल्प एक प्रयास')

गाँव में आया बदलाव, सार्थक हुआ 'संकल्प'

इस ऐतिहासिक सफलता के बाद कोटरा भाठा गांव का माहौल पूरी तरह बदल गया है। जो माता-पिता पहले हचकिचाते थे, वे अब खुद आगे बढ़कर अपने बच्चों को 'संकल्प एक प्रयास' संस्था में पढ़ने के लिए भेज रहे हैं। इन चार बच्चों की कामयाबी ने पूरे गांव के लिए प्रेरणा का काम किया है।

आज इन बच्चों का 'संकल्प' पूरा हुआ है और संस्था का नाम 'संकल्प एक प्रयास' पूरी तरह से सार्थक सिद्ध हुआ है। ग्रामीण अब पूरी संस्था और दोनों शिक्षिकाओं के इस अद्वितीय योगदान के प्रति आभार व्यक्त कर रहे हैं।

SEP की गतिविधियाँ और कवरेज”

फेलोशिप प्रोग्राम

ABG Fellows
25

Seekh Fellows
06

Srijan Fellows
06

Garima Fellows
03

Trainee Seekh Fellows
42

Trainee Srijan Fellows
42

Trainee Garima Fellows
39

सीख : प्रोग्राम

सामुदायिक शिक्षक
506

लर्निंग रिसोर्स सेंटर
248 (11239 छात्र)

ई-मर्ज (डिजिटल कक्षाएं)
——

विलेज लेवल शिक्षा समिति
(ABG सपोर्ट समूह)
175

सीख पीयर लीडर
900

सहभागी पालक
835

होम विजिट
935

नवोदय छात्राएं
1793

सृजन: प्रोग्राम

सामुदायिक शिक्षक
447

लर्निंग रिसोर्स सेंटर
245 (8207 छात्र)

ई-उड़ान (डिजिटल कक्षाएं)
——

विलेज लेवल शिक्षा समिति
175

सृजन पीयर लीडर
——

NMMSE प्रयासरत छात्र
1150

सहभागी पालक
44

स्टेम वर्कशॉप
——

कंप्यूटर लैब
20 (2000 छात्र)

होम विजिट
34

गरिमा : प्रोग्राम

गरिमा मंच
161 (2117 प्रतिभागी)

स्कूल कार्यशाला
——

होम विजिट
——

जागरूकता कार्यक्रम
(नुक्कड़-नाटक)
——

स्वास्थ्य मेला
——

विलेज लेवल शिक्षा समिति
175

ECCE
5461

मेरे प्रिय पाठकों,

जुलाई 2026 का यह महीना 'संकल्प एक प्रयास' के सफ़र में एक नया सवेरा और ऐतिहासिक मील का पत्थर साबित हुआ है। जब मैं आज पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो मुझे केवल अपनी उपलब्धियाँ नहीं, बल्कि छत्तीसगढ़ के 250 गाँवों में गूँजती बच्चों की खिलखिलाहट और उनके सपनों से चमकते चेहरे नज़र आते हैं।

शैक्षणिक सत्र 2026–27 का भव्य 'प्रवेश उत्सव' और 13-14 जुलाई को आयोजित दो दिवसीय इंडक्शन प्रशिक्षण हमारी उस अटूट प्रतिबद्धता का प्रमाण है कि हम 'आदर्श बाल ग्राम' की परिकल्पना को धरातल पर साकार कर रहे हैं। 'सीख', 'सृजन' और 'गरिमा' मंच के माध्यम से 212 से अधिक उत्साही फेलोज़ और हमारे एबीजी विशेषज्ञ साथियों की टीम आज ग्रामीण शिक्षा और सशक्तिकरण की एक नई इबारत लिख रही है। उतई के मुख्य कार्यालय के साथ-साथ राजनांदगांव, बेमेतरा और धमतरी में नए कार्यालयों का विस्तार इस बात का प्रतीक है कि हमारी पहुँच अब हर ज़रूरतमंद तक और भी मज़बूती से हो रही है।

हमारी यात्रा लंबी है, लेकिन हमारे 'परिवर्तन के सारथियों' के हौसले बुलंद हैं। आइए, हम सब मिलकर शिक्षा, संस्कार और स्वावलंबन की इस मशाल को हर गाँव, हर घर और हर बच्चे तक पहुँचाएँ।

शुभकामनाओं सहित,

परिमल सिन्हा,

संस्थापक- संकल्प एक प्रयास

हमारे सहयोगी संस्थाएं

Caring Friends — Helping Good NGOs Perform Better — MUMBAI

Arpan Foundation

DONATEKART

muktangan — learning & growing together

Asha for Education — Bringing hope through education

phf Paul Hamlyn Foundation

INVOLVE — Building Tomorrow

अध्ययन ADHYAYAN

SANKALP — Empowering Dreams, Building Future

SANKALP EK PRAYAS
SOCIETY, BHILAI

Sankalp ek prayas, Virat Nagar, Utai, Durg (C.G.)

Email : sankalpekprayas@gmail | Web : www.sankalpekprayas.org

Follow us on : @SankalpEkPrayas-s4i @SANKALPEK_PRAYAS